अलंकरण समारोह

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017 • 2018 • 2019 • 2020)

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2019 • 2020)

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

संस्कृति संचालनालय

1, शिवाजी नगर (रेडक्रास अस्पताल के पीछे), भोपाल

फोन : 0755-2770598 / Email- director-culture@mp.gov.in

अलंकरण समारोह

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017 • 2018 • 2019 • 2020)

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2019 • 2020)

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017 • 2018 • 2019 • 2020)

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017 • 2018 • 2019 • 2020)

मध्यप्रदेश शासन ने जनजातीय लोक और पारम्परिक कलाओं में उत्कृष्टता और श्रेष्ठ उपलब्धि को सम्मानित करने और इन कलाओं में राष्ट्रीय मानदण्ड विकसित करने की दृष्टि से तुलसी सम्मान के नाम से दो लाख रुपये का एक वार्षिक पुरस्कार स्थापित किया है। यह सम्मान तीन वर्ष में दो बार प्रदर्शनकारी कलाओं और एक बार रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में दिया जाता है।

तुलसी सम्मान का निकष असाधारण सृजनात्मकता, उत्कृष्टता और दीर्घ साधना के निरपवाद सर्वोच्च मानदण्ड रखे गये हैं। चयन की निश्चित प्रक्रिया से यह स्पष्ट है कि कला के राष्ट्रीय मानदण्ड विकसित करने के इस विनम्र प्रयत्न में सभी स्तरों पर विशेषज्ञों की हिस्सेदारी है और इस बात का पूरा ख्याल रखा गया है कि जहाँ एक ओर कलात्मक उपलब्धियों के बारे में एक तरह का व्यापक मत संग्रह सन्दर्भ के लिए उपलब्ध रहे, वहीं सम्मान से विभूषित किये जाने वाले कलाकार या मण्डली का चयन असंदिग्ध निष्ठा और विवेक वाले विशेषज्ञ पूरी निष्पक्षता, वस्तुपरकता और निर्भयता के साथ ऐसे मानदण्डों के आधार पर करें जो उत्तरदायी जीवन दृष्टि, गम्भीर कलानुशासन और सौन्दर्यबोध पर आश्रित हो।

तुलसी सम्मान की चयन प्रक्रिया के अनुसार संस्कृति विभाग, वर्ष विशेष के लिए निर्धारित कलानुशासन के कलाकारों, विशेषज्ञों, रसिकों और संगठनों आदि से अपने रचनात्मक वैशिष्ट्य, ज्ञान और संसक्ति का लाभ लेते हुए इस सम्मान के लिए उपयुक्त कलाकारों अथवा मण्डलियों के नामों की अनुशंसा करने का अनुरोध करता है। ये अनुशंसाएँ संकलित करके विशेषज्ञों की चयन समिति के सामने अन्तिम निर्णय के लिए रखी जाती हैं। इस समिति में राष्ट्रीय ख्याति के कलाकार और विशेषज्ञ शामिल होते हैं। चयन समिति को यह भी स्वतंत्रता है कि यदि कोई नाम छूट गया हो तो उसे अपनी तरफ से जोड़ लें। राज्य शासन ने चयन समिति की अनुशंसा को अपने लिए बंधनकारी माना है।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय तुलसी सम्मान **श्री कैलाशचन्द शर्मा-वर्ष 2017, श्री विक्रम यादव-वर्ष 2018, डॉ. भारती बंधु-वर्ष 2019 तथा श्री तिलकराम पेंद्राम-वर्ष 2020** को प्रदान किया जा रहा है।

♦♦♦

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017 • 2018 • 2019 • 2020)

1. पण्डित गिर्राज प्रसाद 1983-84
2. श्री हीरजी केशव जी 1983-84
3. श्री भगवान साहू 1984-85
4. सुश्री नीलमणि देवी 1985-86
5. सुश्री गंगा देवी 1985-86
6. सुश्री सोना बाई 1986-87
7. श्री मणि माधव चाक्यार 1987-88
8. श्री मदनलाल निषाद 1987-88
9. श्री भुलवाराम यादव 1987-88
10. श्री गोविंद निर्मलकर 1987-88
11. सुश्री फिदाबाई मरकाम 1987-88
12. श्री देवीलाल नाग 1987-88
13. श्री व्ही. गणपति स्थपति 1988-89
14. श्री एन. वीरप्पन 1988-89
15. श्री जिव्या सोमा म्हसे 1988-89
16. यक्षगान दल उडुपी 1988-89
17. श्री सागर खाँ 1989-90
18. श्री सादिक खाँ 1989-90
19. श्री बड़ा गाजी खाँ 1989-90
20. श्री बालप्पा बी. हुक्केरी 1990-91
21. श्री बालकृष्ण दास 1990-91
22. श्री झाडूराम देवांगन 1990-91
23. श्री चमरूराम बघेल 1991-92
24. श्री कोग्गा देवन्ना कामथ 1993-94
25. श्री अर्जुनसिंह धुर्वे 1993-94
26. श्री बेलायुधन नायर 1994-95
27. श्री उमगराज खिलाड़ी 1994-95
28. श्री मांगुणी दास 1995-96
29. श्रीमती महासुन्दरी देवी 1996-97
30. स्वामी हरिगोविन्द 1997-98
31. श्री ओमप्रकाश टाक 1998-99
32. श्री पूरनचंद-प्यारेलाल वडाली 1999-00
33. श्री पूर्णचन्द्रदास बाउल 2000-01
34. श्री गुरुप्पा चेट्टी 2001-02
35. श्री रामकैलाश यादव 2002-03
36. उ. गुलाम मुहम्मद साज नवाज़ 2003-04
37. श्री प्रकाश चन्द 2004-05
38. स्वामी रामस्वरूप शर्मा 2005-06
39. श्री लल्लू बाजपेयी 2006-07
40. श्री एम. रंगास्वामी वेडार 2008-09
41. बाबा जयराम दास व्यास 2009-10
42. श्री रामसहाय पाण्डे 2012-13
43. पं. ओमप्रकाश शर्मा 2013-14
44. श्री पेमा फत्या 2014-15
45. श्री प्रभाकर वरलीकर 2015-16
46. श्री भीखूदान गढ़वी 2016-17
47. **श्री कैलाशचन्द शर्मा 2017-18**
48. **श्री विक्रम यादव 2018-19**
49. **डॉ. भारती बंधु 2019-20**
50. **श्री तिलकराम पेंद्राम 2020-21**

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017-18)

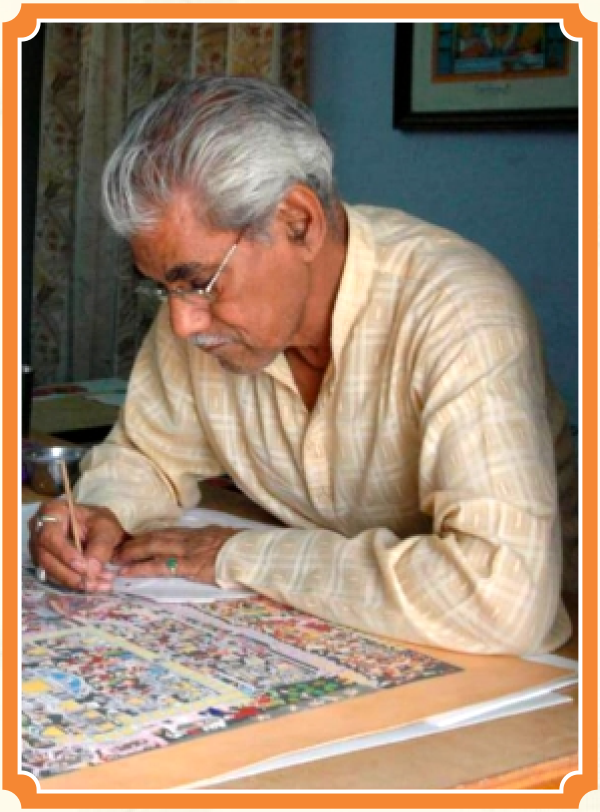

श्री कैलाश चन्द शर्मा

कैलाश चन्द शर्मा

राजस्थान के जयपुर शहर में 11 जुलाई 1944 को जन्मे कैलाशजी की आरंभिक शिक्षा राजस्थान में हुई और वर्ष 1960 में आपने महाराष्ट्र से कला में पत्रोपाधि प्राप्त की है। इसके पश्चात वर्ष 1961 में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा मण्डल, अजमेर से हायर सेकेण्डरी परीक्षा और वर्ष 1964 में राजस्थान के बीकानेर केन्द्र से आर्किटेक्चर में पत्रोपाधि प्राप्त की। चित्रकला की शिक्षा आपने अपने पिता, जो प्रतिष्ठित चित्रकार थे, श्री श्यामसुन्दर लाल से एवं सुप्रसिद्ध चित्रकार पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय से प्राप्त की। आप वर्ष 1961 से 1965 तक माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जयपुर में कला शिक्षक के रूप में पदस्थ रहे इसके बाद वे स्वतंत्र चित्रकार के रूप में ही साधनारत रहे।

लब्ध प्रतिष्ठित चित्रकार और लेखक श्री कैलाशचन्द शर्मा चित्रकला और लेखन में समान अधिकार के साथ साधनारत हैं। चित्रकला और लेखन में पिछले पाँच दशक से सक्रिय कैलाशचन्द शर्मा एक प्रतिष्ठित कला शिक्षक भी हैं और अभी तक पचास से अधिक युवा चित्रकारों को आप परम्परागत लघु चित्रकला (ट्रेडिशनल मिनिएचर पेंटिंग) में शिक्षित कर चुके हैं। सतहत्तर वर्ष की आयु में भी आपका कला शिक्षण का यह क्रम आज भी जारी हैं।

प्रख्यात चित्रकार जमनादास 'मुशव्विर' जो रायल हाउस जयपुर से सम्बद्ध थे उसी मुशव्विर घराने के सुयोग्य शिष्य कैलाशचन्द शर्मा ने तेल एवं जल रंगों से सुप्रसिद्ध मन्दिरों और भव्य इमारतों की दीवारों पर काँच, लकड़ी, कागज, कैनवास, पिछवई कपड़े पर कलमकारी का काम किये हैं। श्री शर्मा को पोट्रेट बनाने और गोल्ड राइटिंग के कार्य में भी विशेषज्ञता प्राप्त है। धार्मिक कथानकों पर बने चित्रों के पुनरुद्धार का कार्य भी आप बखूबी कर लेते है।

श्री कैलाशचन्द शर्मा को वर्ष 1990, 1991 और वर्ष 1995 में उज्जैन की कालिदास अकादमी का अवार्ड, तीन बार राजस्थान ललित कला अकादमी का अवार्ड, भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय का वर्ष 2008 में राष्ट्रीय सम्मान, इसी वर्ष सिटी पैलेस जयपुर का सवाई जगतसिंह अवार्ड और भारत सरकार के मानव संसाधन विभाग की रूपंकर कला की वर्ष 1993 में जूनियर तथा वर्ष 1999 की सीनियर फैलोशिप भी प्राप्त कर चुके हैं।

मध्यप्रदेश शासन श्री कैलाशचन्द शर्मा को लोक रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में आंचलिक सरोकारों के साथ परम्परा एवं चेतना का संरक्षण करते लघु चित्रों के सृजन के लिए राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2017 से सादर विभूषित करता है।

♦♦♦

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2018-19)

श्री विक्रम यादव

विक्रम यादव

छत्तीसगढ़ के नितांत ग्रामीण इलाके में रहने वाले विक्रम यादव बिना किसी विधिवत शिक्षण प्रशिक्षण के बाँसुरी का इतना मधुर वादन करते हैं कि वे श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। बाँस-बाँसुरी बजाने की प्रेरणा श्री विक्रम यादव को अपनी दादी से मिली। श्री विक्रम यादव ने केवल कक्षा दो तक पढ़ाई की है और इसके बाद श्री विक्रम गाँव में ही दूसरों की गाय भैंस चराने का काम करने लगे और गाय-भैंस चराने के दौरान ही वह बाँसुरी वादन का अभ्यास करने लगे।

छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगाँव जिले के खरा गाँव के श्री विक्रम यादव को बचपन से ही बाँस-बाँसुरी बजाने में रूचि थी। श्री विक्रम ने जल्दी ही बाँस-बाँसुरी बजाना सीख लिया। बाँस-बाँसुरी के अलावा श्री विक्रम ने अलगोजा बाँसुरी, टेकनी बाँसुरी, नागदेवन बाँसुरी और ढाड़ बाँसुरी बजाना और बनाना भी सीख लिया। अपने गाँव में पितृपक्ष अथवा छठी के कार्यक्रमों में उन्हें बाँस-बाँसुरी बजाते और गाते देखकर आसपास के गाँव वाले भी श्री विक्रम को मृत्यु उपरान्त दसगात्र में भी बाँस-बाँसुरी बजाने के लिए बुलाने लगे।

श्री विक्रम यादव के बाँस-बाँसुरी वादन के क्रम में बड़ा बदलाव तब आया जब शेखू दास साहू ने उन्हें सुप्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवीर से मिलवाया। वर्ष 1971 में हबीब तनवीर ने उन्हें नया थियेटर बुलवाया। श्री विक्रम बाँस-बाँसुरी बजाते थे। उनके बड़े पिता सुरवु यादव मुँह से बाँसुरी की आवाज निकालते थे, झाडू यादव रागी का काम करते थे और कार्तिक यादव गाते थे। हबीब तनवीर ने इन सबको एकजुट कर बाँस गीत बनाया अब केवल श्री विक्रम यादव, छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति के अध्येता श्री अनूप रंजन पाण्डेय के निर्देशन में बाँस-बाँसुरी बजाते हैं। श्री विक्रम यादव विरोड (जर्मनी) और फ्रैंकफोर्ड (मास्को) सहित देश के सभी प्रमुख शहरों में अपना बाँस-बाँसुरी वादन कर चुके हैं।

मध्यप्रदेश शासन श्री विक्रम यादव को लोक कलाओं के क्षेत्र में नैसर्गिक प्रतिभा, गहरी प्रत्युत्पन्नमति के साथ अभिव्यक्ति एवं बाँस-बाँसुरी वादन में अर्जित पहचान तथा प्रतिष्ठा के लिए राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2018 से सादर विभूषित करता है।

♦♦♦

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2017 एवं 2018)

चयन समिति की बैठक

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान- 2017

लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में रूपंकर कलाओं के लिए

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2017 के लिए चयन समिति की बैठक 29 अगस्त, 2019 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. **श्री रामपूजन पाण्डेय, वाराणसी**
2. **श्री भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन**
3. **श्री अशोक तिवारी, रायपुर**
4. **श्री अनूप रंजन पाण्डेय, बिलासपुर**

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में पुरुषों के उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घ-साधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। वर्ष 2017 का यह सम्मान लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में दिया जाना है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के कलाकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, रसिकों से सीधे तथा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने लक्ष्य किया कि परम्परागत लोकचित्र शैली में लघु चित्रों के माध्यम से जयपुर के श्री कैलाशचन्द शर्मा द्वारा तीन दशक से भी अधिक समय की सृजन-सक्रियता में अत्यन्त सजीव, परम्परागत एवं सुन्दर चित्रांकन के माध्यम से प्रसंगों और चरित्रों को अनूठा सम्मोहन एवं आकर्षण प्रदान किया गया है। उनकी शैली बहुत सूक्ष्म अभिप्रायों को प्रकट करने में सार्थक एवं सफल है। अतएव चयन समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2017 का यह प्रतिष्ठित सम्मान श्री कैलाशचन्द शर्मा को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

(रामपूजन पाण्डेय)	**(भगवतीलाल राजपुरोहित)**	**(अशोक तिवारी)**	**(अनूप रंजन पाण्डेय)**

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान- 2018

लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2018 के लिए चयन समिति की बैठक 29 अगस्त, 2019 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. **श्री रामपूजन पाण्डेय, वाराणसी**
2. **श्री भगवतीलाल राजपुरोहित, उज्जैन**
3. **श्री अशोक तिवारी, रायपुर**
4. **श्री अनूप रंजन पाण्डेय, बिलासपुर**

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में पुरुषों के उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घ-साधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। इस वर्ष यह सम्मान लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में दिया जाना है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के कलाकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, रसिकों से सीधे तथा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने लक्ष्य किया कि ग्राम खैरा, जिला-राजनांदगाँव निवासी कलाकार श्री विक्रम यादव बाँस गीत एवं वादन परम्परा के अत्यन्त दुर्लभ एवं गुणी कलाकार हैं। विगत 50-60 वर्षों में उन्होंने अनेकों कठिनाइयों के बाद भी अपनी साधना को जारी रखा है तथा इस परम्परा के सम्वाहक एवं मिसाल बने हुए हैं। अतएव समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2018 का यह प्रतिष्ठित सम्मान श्री विक्रम यादव को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

(रामपूजन पाण्डेय)	(भगवतीलाल राजपुरोहित)	(अशोक तिवारी)	(अनूप रंजन पाण्डेय)

रामपूजन पाण्डेय

प्रो. रामपूजन पाण्डेय का जन्म 1 जनवरी, 1964 को वाराणसी के पास उत्तरप्रदेश व बिहार प्रांत के संधिभूमि कैमूर जिला के बिहार प्रांत के पाण्डेय पिपरा गाँव में हुआ है। आरम्भिक शिक्षा काशी में स्थित श्री मारवाड़ी संस्कृत महाविद्यालय से प्राप्त। वर्ष 1980 में शास्त्रीपरीक्षा तथा 1983 में आचार्य नव्यन्यायपरीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर विभाग का स्वर्ण पदक प्राप्त किया। अध्यापक के रूप में अध्यापन की शुरूआत 1987 में न्याय विभाग के प्रवक्ता के रूप में जगन्नाथ पुरी में हुई। प्रकाशन – अन्नम्भट्टकृत तर्कसंग्रह:, तट्टीकानां च समीक्षात्मकं सम्पादनम्, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अब तक 30 से अधिक निबंधों का प्रकाशन। प्रकाशनाधीन – अनुमितिपरामर्श कार्य कारण भाव विचार:, न्यायसिद्धांतमंजरी, योग प्रतिमा। राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय अनेक सेमीनारों में सहभागिता। सम्प्रति – आचार्य एवं अध्यक्ष, न्यायवैशेषिक विभाग, छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

♦♦♦

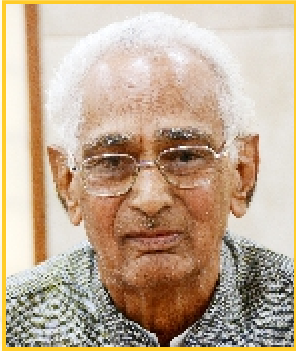

भगवतीलाल राजपुरोहित

2 नवम्बर, 1943 को चंदोडिया (जिला-धार) मध्यप्रदेश में जन्मे डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित का अध्ययन रचना क्षेत्र हिन्दी, संस्कृत, मालवी, इतिहास एवं संस्कृति सम्बन्धी रहा। पैंतालीस वर्षों से निरंतर अनुसंधान लेखन में सक्रिय। उज्जैन के सान्दीपनि महाविद्यालय में हिंदी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रहे। 25 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित जिनमें राजा भोज का रचना विश्व, प्रतिभा भोजराजस्य, भोजराज (सभी पुरस्कृत), राजा भोज, कालिदास, कालिदास का वागर्थ, रघुवंशफल और कालिदास उज्जयिनी और महाकाल, संस्कृत भाषा और साहित्य, भारतीय कला और संस्कृति, भारतीय अभिलेख और इतिहास, संस्कृत नाटक और रंगमंच, मालवी संस्कृति और साहित्य, विद्योत्तमा (उपन्यास), वीणावासवदत्ता, पद्मप्राभृतक, उभयाभिसारिका (संस्कृत रूपकों का हिंदी रूपांतर), सेज को सरोज (पद्मप्राभृतक का मालवी रूपांतर), हलकारों बादल (मेघदूत का मालवी रूपांतर)। वररुचि, भोजदेव आदि विक्रमादित्य प्रमुख हैं। भारत के प्राचीन राजवंश (विश्वेश्वरनाथ रेउ कृत) तीन खण्ड, मालवी लोकगीत, भारतीय अभिलेख का संपादन। म.प्र. उच्च शिक्षा अनुदान आयोग का डॉ. राधाकृष्णन सम्मान, मध्यप्रदेश संस्कृत अकादेमी का भोज पुरस्कार, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् का बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार, भोज सम्मान सहित अनेक सम्मान-पुरस्कार। साहित्य, संस्कृति एवं लोकधारा पर निरंतर अनुसंधान, चिंतन, लेखन। काव्य, नाट्य, कथा, व्यंग्य रचना में अभिरुचि। वर्तमान में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक। उज्जैन में निवास।

♦♦♦

अशोक तिवारी

1952 में रायपुर में जन्मे श्री अशोक तिवारी लोक संस्कृति के एक सुपरिचित जानकार हैं। आपने मानव विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर से प्राप्त की। मीजियोलॉजी में नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली से प्रमाण-पत्र। यार्क विश्वविद्यालय ब्रिटेन से जनजातीय कला के रूपगत संरक्षण विधा में पत्रोपाधि। 30 वर्षों से निरन्तर संस्कृति के क्षेत्र में विभिन्न संग्रहालयों में आपने कार्य किया है एवं नये संग्रहालयों में परिकल्पन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समय-समय पर श्री तिवारी ने विभिन्न महत्वपूर्ण आयोजनों में भाग लिया है एवं भारतीय लोक संस्कृति एवं परम्पराओं पर वक्तव्य दिए हैं। क्षेत्रीय पुरातात्विक संग्रहालय, जगदलपुर एवं मैसूर में कार्य। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में क्यूरेटर के पद पर कार्य। सेवानिवृत्ति पश्चात् रायपुर में निवास।

♦♦♦

अनूप रंजन पाण्डेय

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति के अध्येता के रूप में श्री अनूप रंजन पाण्डेय की सक्रियता विगत तीन दशकों से लगातार है। जनजातीय अंचल की दुर्लभ एवं लम्बे समय से निरन्तर चली आ रही कला-परम्पराओं को लेकर उन्होंने बहुत काम किया है। राज्य सरकार की ओर से तथा एक स्वतंत्र संस्कृतिकर्मी के रूप में श्री अनूप रंजन पाण्डेय ने छत्तीसगढ़ के जनजातीय बहुल क्षेत्रों के कलाकारों को प्रदेश के बाहर मंच प्रदान करने में अहम योगदान किया है। वे छत्तीसगढ़ राज्य से संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की सामान्य सभा के सदस्य भी मनोनीत है। श्री अनूप रंजन पाण्डेय को प्रतिष्ठित नागरिक अलंकरण पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया है। वर्तमान में बिलासपुर में निवास।

♦♦♦

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2019-20)

डॉ. भारती बंधु

डॉ. भारती बंधु

श्रीमती सत्यभामा भारती और स्वामी विद्याधर भारती के पुत्र सर्वश्री जी.सी.डी. भारती, जी. रामानन्द भारती और सी. विधुर्मना वाचस्पति भारती जो 'भारती बन्धु' के नाम से प्रसिद्ध हैं। भजन गायिकी के इस लब्ध प्रतिष्ठित ग्रुप को भजन गायिकी विरासत में मिली है। डॉ. भारती बन्धु पिछले कई सालों से राम, कृष्ण, शिव और माताजी के भजनों की प्रभावी गायन प्रस्तुति करते रहे हैं। भारती बन्धु ने गायिकी की आरंभिक शिक्षा अपने पिता और आध्यात्मिक गुरू स्वामी विद्याधर गैना भारती से प्राप्त कीं। घरानेदार तालीम जिसमें हारमोनियम वादन, गज़ल, ठुमरी और दादरा गायन शामिल था यह उन्होंने किराना घराने के प्रख्यात सारंगी वादक उस्ताद आशिक अली खाँ साहेब से सीखा। सूफी संगीत उन्होंने लगातार पन्द्रह वर्षों तक उस्ताद हाजी ईद अली शाह चिश्ती से सीखा।

भारती बन्धु, आकाशवाणी के अधिमान्य गज़ल गायक हैं। भारती बन्धु पिछले पचास वर्षों से आध्यात्मिक गायिकी कर रहे हैं। भारती बन्धु अभी तक विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों में दस लाख से भी अधिक युवा श्रोताओं के बीच साढ़े सात हजार से अधिक गायिकी के कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं। भारती बन्धु को प्रतिष्ठित नागरिक अलंकरण सम्मान – 'पद्मश्री' के अतिरिक्त लता मंगेशकर पुरस्कार, लोकमान्य अवार्ड, लायन्स आत्मीय अवार्ड, छत्तीसगढ़ गौरव अवार्ड, उत्कल गौरव अवार्ड के साथ ही प्रतिष्ठित चक्रधर राज्य अलंकरण सम्मान से विभूषित किया जा चुका हैं।

इन प्रतिष्ठित सम्मानों के साथ ही भारती बन्धु पण्डित सुन्दर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय की गवर्निंग बॉडी (कार्य परिषद) के सदस्य है। भारती बन्धु कबीर गायन के निष्णात गायक हैं, आपकी गायिकी के कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुतियाँ देश-प्रदेश के विभिन्न प्रतिष्ठित शहरों के साथ ही विदेश में मॉरीशस, जोहान्सबर्ग, पीटर्सबर्ग, फोनिक्स, चैट्सवर्थ, डरबन, माफीकैंग, रेस्टनबर्ग, साउथ अफ्रीका, मास्को, कज़ान, यूएफए, समारा और रसिया में भी आयोजित हो चुकी हैं।

मध्यप्रदेश शासन डॉ. भारती बन्धु को लोक प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में कबीर एवं लोकगायन परम्परा में गहरी साधना देशव्यापी प्रतिष्ठा एवं अपनी उत्कृष्ट पहचान के लिए राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2019 से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2020-21)

श्री तिलकराम पेंद्राम

तिलकराम पेंद्राम

1971 में मध्यप्रदेश के गोण्ड बहुल क्षेत्र अनूपपुर जिले के ग्राम बीजापुरी में श्री तिलकराम का एक कृषक परिवार में जन्म हुआ। जनजातीय समुदायों की खासियत है कि जीवन उपयोग की लगभग सभी आवश्यक वस्तुओं का निर्माण वे या तो स्वयं कर लेते हैं या श्रम के आपसी आदान-प्रदान से पूरा करते हैं।

श्री तिलकराम ने बहुत कम आयु से अपने दादा-नाना को रस्सी बनाने और उनके बुनाई कार्यों को नजदीक से देखा है। पिता को कृषि कार्य में सहयोग करने के पश्चात् जब भी समय मिलता, वे अपने दादा से रस्सी बनाने का कार्य सीखते और बुनाई में उनकी सहायता करते। तिलकराम बुनाई के साथ लकड़ी के विविध जीवन उपयोगी शिल्प भी बनाते हैं। परन्तु इनका मन रस्सी को अत्यन्त चुनौतीपूर्ण आकार-आकृतियों में बुनने के लिए लालायित रहता। गाँव में इसके अवसर नहीं मिल पा रहे थे।

संयोगवश मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, भोपाल के निर्माण में इन्हें रस्सी बुनाई के लिए आमंत्रित किया गया। श्री तिलकराम ऐसे ही अवसर की तलाश में थे, यहाँ उन्हें अपनी पूरी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। इन्होंने अनेक चुनौतीपूर्ण आकारों में रस्सी बुनाई और आकल्पन की जटिलता को प्रदर्शित किया। इनके द्वारा की जाने वाली रस्सी बुनाई सिर्फ कौशल भर नहीं है। श्री तिलकराम ने रस्सी बुनाई की कुशलता को कलात्मक स्तर तक पहुँचाने के साथ ही नवप्रयोग एवं नवीन कार्य की सम्भावना का पथ निर्माण किया है।

मध्यप्रदेश शासन श्री तिलकराम पेंद्राम को रस्सी बुनाई को एक शिल्पांकन शैली के रूप में विकसित करने पीढ़ियों और परम्पराओं के सृजन को निष्ठापूर्वक अनुसरित करने, दीर्घ साधना और सतत् निरन्तरता के साथ किये गये अवदान के लिए **राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2020** से सादर विभूषित करता है।

♦♦♦

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान

(2019 एवं 2020)

चयन समिति की बैठक

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान- 2019

लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2019 के लिए चयन समिति की बैठक 16 सितम्बर, 2021 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. **श्री श्रीपाद जोशी, उज्जैन**
2. **डॉ. राजेश कुमार व्यास, जयपुर**
3. **श्री मुनीन्द्र कुमार मिश्र, शहडोल**
4. **श्री वीरेन्द्र सिंह नागवंशी, ग्वालियर**

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में पुरुषों के उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घ-साधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। वर्ष 2019 का यह सम्मान लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में दिया जाना है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के कलाकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, रसिकों से सीधे तथा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों से परिचित होते हुए यह लक्ष्य किया कि रायपुर निवासी पद्मश्री डॉ. भारती बंधु (स्वामी जी.सी.डी. भारती) कबीर एवं लोक गायन परम्परा के गुणी एवं निष्णात कलाकार हैं। विगत 50 वर्षों की सांगीतिक साधना को आपने निरन्तर जारी रखा है तथा इस परम्परा के सम्वाहक एवं मिसाल बने हुए हैं। लोक गायन विधा के साथ ही आपने सूफी गायन के भी श्रेष्ठ प्रदर्शन में व्यापक ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। अतः समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2019 का राष्ट्रीय तुलसी सम्मान (प्रदर्शनकारी कलाएँ) डॉ. भारती बंधु (स्वामी जी.सी.डी. भारती) को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

(श्रीपाद जोशी) **(डॉ. राजेश कुमार व्यास)** **(मुनीन्द्र कुमार मिश्र)** **(वीरेन्द्र सिंह नागवंशी)**

राष्ट्रीय तुलसी सम्मान- 2020

लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में रूपंकर कलाओं के लिए

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय तुलसी सम्मान वर्ष 2020 के लिए चयन समिति की बैठक 16 सितम्बर, 2021 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. **श्री श्रीपाद जोशी, उज्जैन**
2. **डॉ. राजेश कुमार व्यास, जयपुर**
3. **श्री मुनिन्द्र कुमार मिश्र, शहडोल**
4. **श्री वीरेन्द्र सिंह नागवंशी, ग्वालियर**

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में पुरुषों के उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घ-साधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। इस वर्ष यह सम्मान लोक एवं जनजातीय पारम्परिक कलाओं में रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में दिया जाना है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के कलाकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, रसिकों से सीधे तथा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों से परिचित होते हुए यह लक्ष्य किया कि परम्परागत रस्सी बुनाई शिल्पी कलाकार श्री तिलकरामसिंह पेंद्राम ने विगत तीन दशक से भी अधिक समय की सृजन-सक्रियता में परम्परागत रस्सी बुनाई को संजोये रखा है। रस्सियों को बनाना और उनकी बुनाई में विविध रूपाकारों को रचना इनकी खासियत है, जिसका प्रमाण भोपाल स्थित जनजातीय संग्रहालय में की गई आपकी कलाकारी है। अतः चयन समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2020 का राष्ट्रीय तुलसी सम्मान (रूपंकर कलाएँ) श्री तिलकराम पेंद्राम को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

(श्रीपाद जोशी) **(डॉ. राजेश कुमार व्यास)** **(मुनीन्द्र कुमार मिश्र)** **(वीरेन्द्र सिंह नागवंशी)**

श्रीपाद जोशी

जन्म 17 मई, 1953 को उज्जैन में। स्नातक की शिक्षा बी.एस.सी., एल.एल.बी से पूर्ण। प्रारम्भ से ही नाट्य लेखन, अभिनय, निर्देशन, प्रबंधन, वाचन एवं शिक्षा क्षेत्र में विशेष रूचि। नाट्य क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त, कला क्षेत्र में 45 वर्ष का अनुभव। कई सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं में 40 वर्षों का कार्यानुभव। दूरदर्शन के सीरियल बरगद, फिल्म स्वीकार किया मैंने, अखिल भारतीय कालिदास समारोह एवं मिट्टी की गाड़ी में अभिनय। भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद, नई दिल्ली के रीजनल एडवाईजरी के सदस्य रहें। आप कालिदास संस्कृत अकादमी (म.प्र. संस्कृति) के स्थानीय समिति के सदस्य भी रहे हैं। इसके अलावा आप महाकाल मन्दिर प्रबंध समिति, उज्जैन द्वारा मानसेवी अधिकारी भी रहे हैं। इसके अलावा आप लोकमान्य तिलक सांस्कृतिक न्यास, उज्जैन में न्यासी सचिव का भी कार्यदायित्व सम्पन्न कर चुके हैं। अखिल भारतीय विद्याभारती द्वारा संचालित समितियों में अध्यक्ष, सचिव, आचार्य, प्राचार्य के दायित्व का निर्वहन। विगत 20 वर्षों से अखिल भारतीय संस्कार भारती, कलाक्षेत्र में कार्यरत संस्था का मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के क्षेत्र प्रमुख का दायित्व निर्वहन। कई अखिल भारतीय आयोजन के आयोजक जिनमें (गंगा मनुहार, प्रयागराज कुम्भ, उज्जैन महाकुम्भ में अखिल भारतीय कला साधक संगम) इत्यादि शामिल हैं।

♦♦♦

डॉ. राजेश कुमार व्यास

देश के जाने-माने संस्कृति कर्मी, कवि, कला-आलोचक और यात्रा-वृत्तान्तकार है। साहित्य, संस्कृति एवं कलाओं की उनकी अब तक 21 पुस्तकें प्रकाशित हैं। केन्द्रीय ललित कला अकादमी की पत्रिका समकालीन कला के कलाओं के अन्तर्संबंधों पर केन्द्रित 49 वें अंक का उन्होंने सम्पादन किया है। इसी प्रकार राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा प्रकाशित पत्रिका आकृति के भी वे सम्पादक रहे हैं। दूरदर्शन के दिल्ली, जयपुर केन्द्रों के लिए कई वृत्तचित्रों की स्क्रिप्ट उन्होंने लिखीं है। प्रतिष्ठित अखबारों नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, हिन्दुस्तान के भी वे स्तम्भ लेखक रहे हैं। देश के अनेक बड़े सांस्कृतिक समारोहों में वे व्याख्यान के लिए निमंत्रित किये जाते हैं। उन्हें अनेक पुरस्कार एक सांस्कृतिक लेखक के रूप में प्राप्त हुए हैं।

♦♦♦

मुनीन्द्र कुमार मिश्र

जन्म 1 दिसम्बर 1957 को रीवा (मध्यप्रदेश) में। सुप्रतिष्ठित शास्त्रीय गायक, वादक एवं नर्तक। शास्त्रीय गायन में एम.ए.। सी.सी.आर.टी., नई दिल्ली से ललित कलाओं पर विशेष प्रशिक्षण प्राप्त। तबला वादन के साथ-साथ कथक नृत्य की विधिवत् शिक्षा। प्रदेश व देश के कई छोटे-बड़े आयोजनों में तबला वादन, गायन एवं कथक नृत्य की प्रस्तुतियों के साथ ही आकाशवाणी रीवा एवं आकाशवाणी शहडोल केन्द्रों में लगभग एक हजार से अधिक प्रस्तुतियाँ। शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई उ.मा. विद्यालय, शहडोल के संगीत विभाग में 37 वर्षों तक प्राध्यापक रहें। विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं में सदस्य मनोनीत। अनेक मान-सम्मान प्राप्त, जिनमें भारत सरकार श्रम मंत्रालय पुरस्कार, विंध्य गौरव पुरस्कार इत्यादि शामिल हैं। गायन, वादन एवं नृत्य पर निरन्तर प्रशिक्षण।

♦♦♦

वीरेन्द्र सिंह नागवंशी

जन्म 16 जुलाई 1993। वीरेन्द्र सिंह नागवंशी स्वतंत्र कलाकार हैं तथा आप ग्वालियर के द सिंधिया स्कूल में पेपर मैशी कला विभाग में शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। आपने परम्परागत पेपर मैशी कला को आगे बढ़ाते हुए शासकीय ललित कला महाविद्यालय, ग्वालियर से बी.एफ.ए. एवं राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर से एम.एफ.ए. मूर्तिकला विषय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया है जिसमें आप स्वर्ण पदक विजेता भी रहे हैं तथा यूजीसी दृश्य कला में नेट क्वालिफाइड किया है। आपकी कलाकृतियों की प्रदर्शनी देश के विभिन्न ख्याति प्राप्त कलाकारों के साथ विभिन्न स्थानों पर आयोजित की जा चुकी हैं। आपके द्वारा बनाई गई मूर्ति शिल्प देश के विभिन्न संस्थानों में स्थापित हैं जिसमें प्रमुख रूप से गोवा म्यूजियम, जीवाजी विश्वविद्यालय, स्मार्ट सिटी डिजीटल एवं वर्चुअल म्यूजियम ग्वालियर, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय तथा ललित कला महाविद्यालय इत्यादि हैं। आप मूर्तिकला के सभी माध्यम जैसे पत्थर, लकड़ी, धातु, सीमेंट, टेराकोटा इत्यादि में कार्य करते हैं परन्तु आपको पेपर मैशी शिल्प में महारथ हासिल है। वर्तमान में आप ग्वालियर में रहकर इस कार्य को कर रहे है।

♦♦♦

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2019 एवं 2020)

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान
(2019 एवं 2020)

देवी अहिल्या बाई कुशल शासिका, न्यायविद, सच्ची समाज सेविका और कलाप्रिय विदुषी जननायिका थीं। वे स्नेह, दया और धर्म की प्रतिमूर्ति थीं। अहिल्याबाई महिला शक्ति की प्रतीक हैं। उनका जीवन और कार्य समस्त स्त्री जाति के लिए एक उदाहरण है। उनकी स्मृति में देश की सृजनशील महिलाओं के सम्पूर्ण अवदान के लिए राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान दिया जाना सुनिश्चित किया गया है।

मध्यप्रदेश शासन ने जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में महिला कलाकारों की सृजनात्मकता को सम्मानित करने के लिए वर्ष 1996-97 से देवी अहिल्या सम्मान स्थापित किया है। इस सम्मान से विभूषित कलाकार को दो लाख रुपये की सम्मान राशि और प्रशस्ति पट्टिका प्रदान की जाती है। देवी अहिल्या सम्मान सृजनात्मक उत्कृष्टता, दीर्घ साधना और कलाकार की वर्तमान में सृजन सक्रियता के मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान दिये जाने के समय चुने गये कलाकार का सृजन सक्रिय होना अनिवार्य है।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा वर्ष 2019 का राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान मण्डला की सुप्रतिष्ठित गुदना कलाकार **श्रीमती शांतिबाई मरावी** को तथा वर्ष 2020 का यह सम्मान भोजपुरी, अवधी की सुविख्यात लोक गायिका **श्रीमती मालिनी अवस्थी** को प्रदान किया जा रहा है।

♦♦♦

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2019 एवं 2020)

1.	श्रीमती तीजन बाई	1996–97
2.	श्रीमती विंध्यवासिनी देवी	1997–98
3.	श्रीमती भूरी बाई	1998–99
4.	श्रीमती यमुनाबाई बाईकर	1999–00
5.	श्रीमती सुरूज बाई खाण्डे	2000–01
6.	सुश्री सारा इब्राहिम	2001–02
7.	श्रीमती गुरमीत बावा	2002–03
8.	श्रीमती राज बेगम	2003–04
9.	सुश्री रुकमा देवी मांगणियार	2004–05
10.	श्रीमती शारदा सिन्हा	2005–06
11.	सुश्री गौरी देवी	2006–07
12.	डॉ. शान्ति जैन	2007–08
13.	सुश्री गुलाबो	2008–09
14.	श्रीमती सर्वजीत कौर शर्मा	2009–10
15.	सुश्री कृष्णा कुमारी माथुर	2012–13
16.	श्रीमती कमला श्रीवास्तव	2013–14
17.	श्रीमती रंगबती बघेल	2014–15
18.	श्रीमती मीरा गुप्ता	2015–16
19.	श्रीमती बसंती देवी बिष्ट	2016–17
20.	श्रीमती कृष्णा वर्मा	2017–18
21.	श्रीमती शांति देवी झा	2018–19
22.	**श्रीमती शांतिबाई मरावी**	**2019–20**
23.	**श्रीमती मालिनी अवस्थी**	**2020–21**

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2019-20)

शांतिबाई मरावी

शांतिबाई मरावी

वर्ष 1959 में मध्यप्रदेश के डिण्डोरी जिले के ग्राम लालपुर में जन्मी शांतिबाई मरावी गुदना कला की एक महत्वपूर्ण कलाकार हैं। अपने इस कौशल के कारण ये गोण्ड और बैगा जनजातीय समुदाय के पारंपरिक गुदना प्रतीकों को रचने के लिए डिण्डोरी और मण्डला जिले में बहुत प्रसिद्ध हैं।

शांतिबाई का बचपन संघर्षों में बीता। जब वे तीन वर्ष की थी, तब इनकी माता ने किन्हीं कारणों से घर छोड़ दिया। पिता आस-पास की बस्तियों में चिकारा बजाकर दैनिक भोजन की व्यवस्था कर बच्चों का लालन-पालन करते। बालिका शांति ने अपने रिश्ते-नातेदार एवं गाँव की अन्य महिलाओं से गुदना का कार्य सीखा। कम आयु में शांति का विवाह चमर सिंह से हो गया। बचपन का संघर्ष विवाह पश्चात् भी जारी रहा और पति-पत्नि एक साथ आस-पास के गाँवों में गुदना करने लगे। शांतिबाई बहुत धैर्य और प्रेम पूर्वक बच्चियों एवं स्त्रियों की देह पर गुदना करने लगीं। मान्यता है कि गुदना जनजातीय समुदाय की महिलाओं का ऐसा एकमात्र आभूषण है जो मृत्यु के बाद भी उनके साथ जाता है। गुदना कराने में होने वाली असहनीय पीड़ा को देखते और अनुभव करते हुए बहुत बार शांति का मन विचलित होता, किन्तु गुदना करने में उनके हाथ कभी नहीं काँपे।

शांतिबाई को चार बेटियों के घर-परिवार को सुचारू रूप से चलाने के लिए अधिक से अधिक कार्य करना था। पति चमरसिंह ने गुदना की स्याही निर्मित करने एवं प्रत्येक अंग के अनुरूप सुई तैयार करने के कार्य में शांतिबाई की हर संभव सहायता की। शांतिबाई गोंड और बैगा समुदायों की स्त्रियों के लिए गुदना करती हैं, किन्तु उनकी महारत बैगा गुदना के पारंपरिक अलंकरण में है। धीरे-धीरे शांतिबाई ने अपने हुनर और उसकी बारीकियों को अपनी पुत्रियों को भी सिखाना आरंभ किया, जिससे घर की आय के स्त्रोत बढ़ें। समय के साथ देह अलंकरण गुदना की आकृतियाँ एक चित्रकला के रूप में भी दुनिया में अपनी पहचान बना रही हैं। गुदना केवल दैहिक अलंकरण न रहकर कागज, कैनवास एवं दीवारों पर भी अपना स्थान बना रहा है।

शांतिबाई ने गोदना में अंकित किये जाने वाले अंग अनुसार सुनिश्चित रूपाकारों के साथ ही आकर्षण के लिए अंकित किये जाने वाले प्रतीकों को कागज पर उकेरा। यहीं से उन रूपाकारों के आकार में विस्तार देने की प्रेरणा उनके मस्तिष्क में उपजी। शांतिबाई ने गोदना रूपाकारों के आकार में चित्रकला की मांग के अनुसार परिवर्तन किया। यह आचरण पूर्णतय: नवाचारी था, जिसके लिए शांतिबाई को चित्रकार के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। गुदना प्रतीकों के इस नवप्रयोग के लिए उन्हें राष्ट्रीय स्तर के शिविरों में आमंत्रित किया जाने लगा। अब इनकी पहचान गुदनहारी के साथ चित्रकार के रूप में भी प्रतिष्ठित है।

मध्यप्रदेश शासन श्रीमती शांतिबाई मरावी को गोण्ड और बैगा जनजाति में प्रचलित गुदना अंकन के क्षेत्र में उनके संरक्षण, संवर्धन, परिमार्जन एवं उसकी अस्मिता को बचाने हेतु किये गये अवदान के लिए राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान वर्ष 2019 से सादर विभूषित करता है।

♦♦♦

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2020-21)

मालिनी अवस्थी

मालिनी अवस्थी

सुश्री मालिनी अवस्थी का जन्म 11 फरवरी 1967 को उत्तरप्रदेश की बहुश्रुत इत्र की नगरी कन्नौज में हुआ। अपने नाम की ही तरह मालिनी जी अपने संगीत एवं स्वर से दुनिया भर में अपनी महक फैलाये हुए हैं। स्वदेश की मिट्टी की खुशबू और परम्पराओं की महिमा इनके लोक संगीत में सहज प्रतिध्वनित होती है। वर्तमान में सुश्री मालिनी अवस्थी लोक कथाओं और गीतों के लिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भारत अध्ययन केन्द्र में चेयर प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं, साथ ही UNESCO में भारत की ओर से सांस्कृतिक प्रतिनिधि के रूप में भी कार्य कर रही हैं। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित सुश्री मालिनी जी ICCR की संचालक निकाय की सदस्य भी हैं। वे मौखिक परम्पराओं को संरक्षित करने के लिए भावनात्मक रूप से प्रयत्नशील हैं और उनका मानना है कि लोक संगीत का संरक्षण उनका धर्म है।

सुश्री मालिनी अवस्थी बनारस घराने की सुप्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत गायिका पद्मविभूषण गिरिजा देवी जी की शिष्या रही हैं। आप बनारस की प्रसिद्ध पूरबी अंग की अग्रणी गायिका हैं। मालिनी जी ने संगीत में स्नातकोत्तर की डिग्री लखनऊ के भातखण्डे संगीत संस्थान से प्राप्त की है। आप देश के प्रतिष्ठित सांस्कृतिक मंचों, आकाशवाणी, दूरदर्शन के साथ ही अन्य चैनलों पर निरन्तर गायन प्रस्तुतियाँ दे रही हैं। आपने दस से अधिक देशों की सांगीतिक यात्रा में अपने गायन की विशिष्टता से देश का मान बढ़ाया है। सुश्री मालिनी अवस्थी ने प्राचीन ठुमरी दादरा, कजरी, झूला, होली, चैती, संस्कार, श्रम, ऋतु, निर्गुण और अवध तथा बनारस घराने के अन्य गीतों पर भी काम किया है।

वर्ष 2016 में सुश्री मालिनी अवस्थी को भारतीय लोक संगीत को संरक्षित एवं प्रसिद्ध करने के लिए संगीत के क्षेत्र में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से विभूषित किया गया है। साथ ही उत्तरप्रदेश सरकार का यश भारती सम्मान भी आपको प्राप्त हुआ है। सुश्री मालिनी अवस्थी 'सोनचिरैया' नाम से एक गैर सरकारी स्वैच्छिक संस्था संचालित करती हैं, जिसका उद्देश्य ग्रामीण, जनजातीय एवं लोक कलाकारों को मंच प्रदान करना है।

मध्यप्रदेश शासन सुश्री मालिनी अवस्थी को भोजपुरी,अवधी एवं बुन्देली शैली की लोकगायन परम्परा के क्षेत्र में गहरे समर्पण, सुदीर्घ साधना और गीत-संगीत की आंचलिक पृष्ठभूमि के उत्कृष्ट एवं कर्णप्रिय प्रतिमानों के लिए **राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान वर्ष 2020** से सादर विभूषित करता है।

♦♦♦

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान

(2019 एवं 2020)

चयन समिति की बैठक

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान-2019

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान वर्ष 2019 के लिए चयन समिति की बैठक 16 सितम्बर, 2021 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. **पद्मश्री श्रीमती भूरी बाई, भोपाल**
2. **डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, उज्जैन**
3. **श्री बुधपाल सिंह, बैतूल**

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में महिलाओं के उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घ-साधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के कलाकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, रसिकों से सीधे तथा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों से परिचित होते हुए यह लक्ष्य किया कि श्रीमती शांतिबाई मरावी मण्डला अंचल की श्रेष्ठ पारम्परिक गुदना कलाकार हैं। आपने विरासत में मिली इस कला को विगत चार दशकों से भी ज्यादा समय से संजोये रखा है। आप बैगा और गोण्ड जनजाति में प्रचलित गुदनों को शरीर पर कलात्मक रूप से अंकित करती है। वर्तमान में आप निरन्तर सृजन-सक्रिय है। अतः समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2019 का राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान श्रीमती शांतिबाई मरावी, मण्डला को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

भूरीबाई
(भूरी बाई)

(डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा)

(बुधपाल सिंह)

राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान-2020

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान वर्ष 2020 के लिए चयन समिति की बैठक 16 सितम्बर, 2021 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. **पद्मश्री श्रीमती भूरी बाई, भोपाल**
2. **डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, उज्जैन**
3. **श्री बुधपाल सिंह, बैतूल**

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों, नियमों एवं चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान जनजातीय, लोक एवं पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र में महिलाओं के उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घ-साधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय कलाकार का सृजन-सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के कलाकारों, विशेषज्ञों, आलोचकों, रसिकों से सीधे तथा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों से परिचित होते हुए यह लक्ष्य किया कि भोजपुरी, अवधी, बुन्देलखण्डी शैली की निष्णात लोक गायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी विगत चार दशकों से भी ज्यादा समय से सतत् सक्रिय है। लोक गायन विधा के साथ ही आपने ठुमरी और कजरी जैसी पारम्परिक विधा की मूलभूत शुचिता एवं अनुशासन को अक्षुण्ण रखते हुए उसके श्रेष्ठ प्रदर्शन में व्यापक ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। अतः समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2020 का राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान श्रीमती मालिनी अवस्थी, लखनऊ को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

भूरीबाई

(भूरी बाई) | **(डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा)** | **(बुधपाल सिंह)**

पद्मश्री भूरी बाई

श्रीमती भूरी बाई भील जनजाति की पारम्परिक चित्रकार है। उनका जन्म झाबुआ जिले के छोटे से गाँव पिटोल में वर्ष 1964 में हुआ। भूरी बाई ने पाँच वर्ष की उम्र से पारम्परिक चित्रकारी की शिक्षा पारिवारिक वातावरण से प्रेरित होकर प्राप्त की। अपने पिता के साथ अनुष्ठान अवसरों पर साथ जाते हुए उन्होंने गेरु, नील, खड़िया, काजल, हल्दी के रंगों से घर की दीवारों को सजाने का कार्य किया। रंग और रेखाओं का महत्व उन्हें छोटी उम्र से ही समझ आने लगा था। उन्होंने भीली चित्र परम्परा के अभिप्रायों और अलंकरणों को अच्छी तरह उकेरना सीखा। विवाह के पश्चात् भोपाल में मजदूरी करते हुए भी उन्होंने अपनी सर्जना को जारी रखा। भारत भवन में रूपंकर आर्ट गैलेरी के स्वप्नदृष्टा स्वर्गीय जगदीश स्वामीनाथन ने सुश्री भूरी बाई की प्रतिभा को पहचाना और प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे उनके चित्रों की ख्याति देश से लेकर दुनिया तक की महत्वपूर्ण कला-दीर्घाओं में प्रदर्शित उनके चित्रों के माध्यम से पहुँची। मध्यप्रदेश शासन ने सुश्री भूरी बाई को पहले राज्य स्तरीय शिखर सम्मान और कुछ वर्ष पश्चात् राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान से विभूषित किया। अभी कुछ दिन पूर्व ही भारत सरकार द्वारा सुश्री भूरी बाई को पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया है।

♦♦♦

डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा

जन्म उज्जैन में। शिक्षा-बी.एस.सी., एम.ए., एम. फिल, पीएच.डी. (हिन्दी) विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से। संस्थापक-समन्वयक, विश्व हिन्दी संग्रहालय एवं अभिलेखन केन्द्र, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन। मुख्यत: आलोचना, निबन्ध, संस्मरण, नाटक तथा रंगमंच समीक्षा, लोक साहित्य, संस्कृति-विमर्श पर लेखन एवं अनुसंधान कार्य में विगत तीन दशकों से निरन्तर सृजन-सक्रिय। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की 250 से अधिक शोध संगोष्ठियों में आतिथ्य एवं शोधपत्र वाचन। 35 से अधिक ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन एवं प्रकाशन। 350 से अधिक शोध निबंधों का प्रकाशन तथा 850 से अधिक कला एवं रंगकर्म समीक्षाओं का प्रकाशन। देश के अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थाओं द्वारा आयोजित साहित्यिक समारोहों, संगोष्ठियों, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं में विशिष्ट व्याख्यान। अनेक देशों की सांस्कृतिक यात्राएँ जिनमें मॉररीशस, थाईलैंड, सिडनी इत्यादि शामिल हैं। एम.ए. एवं एम.फिल. शोधोपाधि के 70 से अधिक शोधकर्ताओं का निर्देशन। अनेक नवाचारी विषयों पर शोध निर्देशन। सम्प्रति - प्रो. एवं अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययनशाला और कुलानुशासक, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य शोध पत्रिका 'अक्षरवार्ता' के प्रधान संपादक।

♦♦♦

बुधपाल सिंह

जन्म 1 जनवरी, 1961 को रोंसरारानी (रायसेन) में। प्राथमिक शिक्षा रोंसरारानी से, इसके पश्चात् कला विषय में स्नातक शिक्षा जयवंती हॉक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल से। बैतूल जिले की प्रमुख जनजाति गोण्ड व कोरकू भाषा पर 2009 से अध्ययन एवं लेखन कार्य, जिसके अंतर्गत 'गोण्डी भाषा' में हिन्दी गोण्डी शब्दकोष का सॉफ्टवेयर बनाने में प्रमुख सहयोग। बैतूल से 2013 से दुनिया का पहला गोंडी भाषा का साप्ताहिक समाचार पत्र 'लोकांचल' प्रकाशित कर, जनजाति भाषा बोली संरक्षण का उल्लेखनीय कार्य। जनजाति महापुरुषों, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की जीवन गाथा पर गीत रचना, साथ ही कोरकू भाषा, बोली पर कार्य। संप्रति – अखिल भारतीय सह संयोजक एवं प्रांत प्रमुख विद्या भारती जनजाति क्षेत्र की शिक्षा मध्य भारत प्रांत।

♦♦♦

संस्कृति के क्षेत्र में मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित राष्ट्रीय एवं राज्य सम्मान

क्र.	सम्मान का नाम	स्थापना वर्ष	सम्मान राशि	विधा, जिसके लिए सम्मान देय है
राष्ट्रीय सम्मान				
1.	महात्मा गांधी सम्मान	1995	10 लाख	गांधी विचार दर्शन के अनुरूप कार्य करने वाली संस्था को
2.	कबीर सम्मान	1986	3 लाख	भारतीय कविता के क्षेत्र में
3.	मैथिलीशरण गुप्त सम्मान	1987	2 लाख	हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में
4.	इकबाल सम्मान	1986	2 लाख	उर्दू साहित्य में रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में
5.	तानसेन सम्मान	1980	2 लाख	हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में
6.	कालिदास सम्मान (शास्त्रीय संगीत)	1980	2 लाख	शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में
7.	कालिदास सम्मान (शास्त्रीय नृत्य)	1980	2 लाख	शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में
8.	कालिदास सम्मान (रंगकर्म)	1980	2 लाख	रंगकर्म के क्षेत्र में
9.	कालिदास सम्मान (रूपंकर कलाएँ)	1980	2 लाख	रूपंकर कलाओं के क्षेत्र में
10.	तुलसी सम्मान	1983	2 लाख	आदिवासी, लोक व पारंपरिक कलाओं के क्षेत्र में पुरुष कलाकार
11.	देवी अहिल्या सम्मान	1996	2 लाख	आदिवासी, लोक एवं पारंपरिक कलाओं के क्षेत्र में महिला कलाकार
12.	शरद जोशी सम्मान	1992	2 लाख	हिंदी व्यंग्य, ललित निबंध, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र आदि
13.	लता मंगेशकर सम्मान	1984	2 लाख	सुगम संगीत के क्षेत्र में संगीतकार व गायक को
14.	किशोर कुमार सम्मान	1997	2 लाख	फिल्म के क्षेत्र में : निर्देशन, अभिनय, पटकथा, गीत लेखन
15.	कवि प्रदीप सम्मान	2012	2 लाख	मंचीय कविता के क्षेत्र में
16.	नानाजी देशमुख सम्मान	2012	2 लाख	सामाजिक, सांस्कृतिक समरसता, उत्थान, परिष्कार, आध्यात्म, परंपरा, समाज एवं विकास तथा संस्कृति की मूल अवधारणा के लिए गहन एवं प्रतिबद्धतापूर्ण कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था
17.	कुमार गंधर्व सम्मान	1992	1.25 लाख	शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में : गायन, वादन एवं नृत्य
18.	राजा मानसिंह तोमर सम्मान	2011	1.00 लाख	संगीत, संस्कृति एवं कला संरक्षण में कार्य करने वाली संस्था के लिए
19.	सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान	2015	1.00 लाख	हिंदी सॉफ्टवेयर सर्च इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजीटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजीटल ऑडियो, विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट लेखन
20.	निर्मल वर्मा सम्मान	2015	1.00 लाख	भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिंदी के विकास में अमूल्य योगदान
21.	फादर कामिल बुल्के सम्मान	2015	1.00 लाख	विदेशी मूल के व्यक्ति के हिंदी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए
22.	गुणाकर मुले सम्मान	2015	1.00 लाख	हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य-पुस्तकों में लेखन
23.	हिंदी सेवा सम्मान	2015	1.00 लाख	अहिंदी भाषी लेखकों और साहित्यकारों को लेखन सृजन से हिंदी की समृद्धि के लिए योगदान के लिए
राज्य सम्मान				
24.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	हिन्दी साहित्य
25.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	उर्दू साहित्य
26.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	संस्कृत साहित्य
27.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	रूपंकर कलाएँ
28.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	नृत्य
29.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	नाटक
30.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	संगीत
31.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	आदिवासी एवं लोक कलाएँ
32.	शिखर सम्मान	1980	1.00 लाख	दुर्लभ वाद्य वादन